Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण का संरक्षण

अभिषेक सिंह,
भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
मो0 नं0– 8317044502

धूप का जंगल, नंगे पाँवों, इक बंजारा करता क्या?
रेत का दरिया, रेत के झरने, प्यास का मारा करता क्या?
बादल–बादल आग लगी थी, छाया तरसे छाया को
पत्ता–पत्ता सूख चुका था, पेड़ बेचारा करता क्या?''

शायर अंसार कम्बरी की ये पंक्तियाँ घोर पर्यावरणीय संकट की समस्या पर प्रकाश डालती हैं, जो आज की पीढ़ी तथा आने वाली पीढ़ियों के सम्मुख एक बड़े संकट के रूप में सामने आ सकता है क्योंकि पर्यावरण मनुष्य के जीवन का आधार है। बिना स्वस्थ पर्यावरण के मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। वैश्विक रूप से अंधाधुंध संसाधनों के दोहन व अधारणीय विकास से आज कई समस्याएँ मनुष्य के सामने मुँह बाए खड़ी हैं। अतः हमें यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि पर्यावरण और अर्थव्यवस्था दोनों एक–दूसरे पर निर्भर तथा आवश्यक हैं। पर्यावरणीय प्रभावों की अवहेलना करने वाला विकास उस पर्यावरण का विनाश कर देगा जो हमारे जीवन को धारण करता है। किसी भी जीवित प्राणी के चारों ओर पाए जाने वाले लोग, स्थान, वस्तुएँ एवं प्रकृति को पर्यावरण कहते हैं। यह प्राकृतिक व मानव निर्मित घटनाओं का मिश्रण है। प्राकृतिक पर्यावरण में पृथ्वी पर पाई जाने वाली जीवीय एवं अजीवीय दोनों परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं जबकि मानवीय पर्यावरण में मानव की परस्पर क्रियाएँ, उनकी गतिविधियाँ एवं बनाई गई रचनाएँ सम्मिलित हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के लिये पर्यावरण कुछ आवश्यक कार्य करता है। जैसे– यह संसाधनों की पूर्ति के अलावा उत्पन्न अवशेष को अपने में समाहित करता है। पर्यावरण जैव–विविधता प्रदान कर जीवन का पोषण करता है। विकासशील देशों में तेजी से बढ़ती जनसंख्या और विकसित देशों के समृद्ध उपभोग व उत्पादक मानकों ने संसाधनों के अंधाधुंध दोहन को बढ़ावा दिया जिससे

सृजित अवशेष पर्यावरण की अवशोषी क्षमता से बाहर हो गए। इसे कारण ही हम पर्यावरण संकट की दहलीज पर खड़े हैं। अतः आवश्यकता ऐसे विकास की है जो भावी पीढ़ियों को जीवन की संभावित औसत गुणवत्ता प्रदान करे, जो कम–से–कम वर्तमान पीढ़ी द्वारा उपभोग की गई सुविधाओं के बराबर हो। विकास का वह रूप ही धारणीय विकास है जो पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रख विकास को बढ़ावा देता है।

अब प्रश्न यह है कि धारणीय विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ से ही अंगीभूत क्यों नहीं की गई, क्यों आज इस धारणीय विकास की आवश्यकता महसूस की जा रही है? क्या पर्यावरणीय समस्याएँ इस शताब्दी के लिये नई हैं? इन प्रश्नों के उत्तर के लिये विस्तार से विश्लेषण की आवश्यकता है।

सभ्यता के प्रारंभ में पर्यावरणीय संसाधनों की मांग और सेवाएँ उनकी पूर्ति से बहुत कम थीं, इसका तात्पर्य है कि पर्यावरणीय प्रदूषण, प्रकृति की अवशोषण क्षमता के भीतर थी और संसाधन की निष्कर्षण दर इन संसाधनों के पुनर्सृजन की दर से कम थी, इसीलिये उस समय पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न नहीं हुई थी। किन्तु, जनसंख्या विस्फोट और जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये औद्योगिक क्रांति के आगमन से स्थितियाँ बदल गई। परिणामस्वरूप उत्पादन और उपभोग के लिये संसाधनों की मांग, संसाधनों की पुनर्सृजन दर से बहुत अधिक हो गई; पर्यावरण की अवशोषण क्षमता पर दबाव बढ़ गया। इस तरह मांग व आपूर्ति संबंध पूरी तरह से उलट गए जिससे वातावरणीय पटल पर गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हुई जो प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, ओजोन क्षरण व अम्ल वर्षा आदि के रूप में हमारे सामने खड़ी हैं, जिसका प्रभाव वैश्विक के साथ स्थानीय जलवायु व मौसम पर भी पड़ रहा है।

औद्योगिक क्रांति के पश्चात् पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि हुई है। मूलतः इस तापमान वृद्धि का कारण ग्लोबल वार्मिंग है। अगर इस समस्या का समाधान त्वरित न किया गया तो पृथ्वी के औसत तापमान में भारी बढ़ोत्तरी की आशंका है, जिसका प्रभाव फ्रेंच पोलेनेशिया से लेकर मालदीव, श्रीलंका, मॉरीशस सहित अनेक छोटे–बड़े देशों व सभी देशों के तटवर्ती क्षेत्रों पर पड़ेगा। किन्तु अंधे विकास की प्रक्रिया में विकसित व विकासशील देश अपनी–अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ रहे हैं तथा एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का समाधान नहीं कर सकते बल्कि इसके लिये बाध्यतापूर्ण नीति के अलावा स्वयं देशों को दृढ़ इच्छा शक्ति दिखाकर कार्बन उत्सर्जन को कम करना होगा क्योंकि जलवायु में हो रहे परिवर्तन का प्रभाव सामूहिक ही है। जलवायु परिवर्तन के कारण जल संकट,

खाद्य संकट के साथ गरीबी बढ़ने का अनुमान विभिन्न रिपोर्टों में लगाया गया है।

औद्योगिक क्रांति के पश्चात् विश्व के विकसित देशों ने अपनी–अपनी विकास प्रक्रिया को तीव्र करने के लिये संसाधनों का अंधाधुंध दोहर प्रारम्भ कर दिया, जिसके कारण वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में लगभग 40 फीसदी की वृद्धि हुई है। आज भारी मात्रा में जीवाश्म ईंधन के प्रयोग तथ आधुनिक जीवनशैली के कारण वायुमंडल में कार्बन डाइ–ऑक्साइड का उत्सर्जन लगातार बढ़ रहा है। इस समस्या में वृद्धि विश्व में विकास की प्रक्रिया तेज करने के लिये जंगलों या वनों को साफ किये जाने से बढ़ी है, क्योंकि कार्बन डाइऑक्साइड का शोषण इन्हीं पेड़ों द्वारा होता है। विकास को तीव्र करने की प्रक्रिया में हम यह भी भूल गए कि प्रकृति, जो हमें जीने के लिये स्वच्छ वायु, पीने के लिये शीतल जल और खाने के लिये कंद–मूल उपलब्ध कराती थी, आज वह संकट में है। उसकी सुरक्षा का सवाल उठ रहा है।

पर्यावरण के किसी भी तत्त्व में होने वाला अवांछनीय परिवर्तन, जिससे जीव–जगत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, प्रदूषण कहलाता है। पर्यावरण प्रदूषण में मानव विकास की प्रक्रिया तथा आधुनिकता का महत्वपूर्ण योगदान है। औद्योगिक क्रांति का सकारात्मक प्रभाव वायु प्रदूषण के रूप में भी हमारे सामने है। उत्पादन व आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र करने की प्रतिस्पर्द्धा में देशों ने अपने वायुमंडल को इतना प्रदूषित कर लिया है कि वहाँ के नागरिकों में अनेक श्वास संबंधी रोगों के साथ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल 2 से 4 लाख लोगों की मौत का कारण वायु प्रदूषण है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात् वायु प्रदूषण के कारण 1952 में लन्दन में भारी धूम कोहरा की घटना हुई जिससे छह दिन में 4000 से ज्यादा लोग मारे गए। भारत में सबसे बड़ी प्रदूषण आपदा 1984 में भोपाल त्रासदी में घटी। इसकी यादें आज भी भारतीय मानस पटल पर हैं। हाल ही में प्रकाशित एक ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रदूषण के कारण दिल्ली में सालाना दस हजार से तीस हजार जानें जा रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक नई रिपोर्ट में दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों पीएम 2.5 स्तर की सूची में 10 भारत में हैं, जिसमें दिल्ली एवं वाराणसी का प्रथम स्थान है।इसके अतिरिक्त पीएम 2.5 स्तर की सूची में अन्य भारतीय शहर कानपुर, फरीदाबाद, गया, पटना, आगरा, मुजफ्फरपुर, श्रीनगर, गुडगॉव, जयपुर, पटियाला और जोधपुर हैं। हमारे पड़ोसी देश चीन की राजधानी बीजिंग में धूम कोहरा एक बड़ी समस्या है। यू.एस.ए. के लॉस एंजिल्स की स्थिति इतनी भयावह है कि

वहाँ स्कूल के खेल के मैदानों पर चेतावनी लिखी गई है– 'सावधान, अत्यधिक धुएँ की स्थिति में व्यायाम न करें, न गहरी साँस लें।' वैश्विक परिदृश्य पर प्रदूषण से संबंधित तथ्य इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि आखिर हम कौन–सा विकास कर रहे हैं जो हमारे जल, वायु, स्वास्थ्य, पर्यावरण सभी पर हानिकारक प्रभाव डाल रहा है। सोचने की बात यह है कि ऐसा तीव्र व अंधाधुंध विकास किस काम का, जिसका लाभ अपने निवासियों व विश्व को लाभदायक रूप में न हो सके। अतः हमें विकास का विरोध करना आवश्यक है। सियरा क्लब का यह कथन कि *''विकास का अन्धविरोध नहीं बल्कि अंधे विकास का विरोध आवश्यक है''*, सटीक प्रतीत होता है।

वैश्विक जगत में पर्यावरणीय समस्याओं व विकास की प्रक्रिया का संबंध किस प्रकार का हो इस पर चिंता प्रकट की गई, जिसकी परिणति 1972 में स्टॉकहोम सम्मेलन के रूप में हुई। ब्रंटलैंड कमीशन की 1987 में प्रकाशित रिपोर्ट 'आवर कॉमन फ्यूचर' में धारणीय विकास की संकल्पना प्रस्तुत की गई। यह रिपोर्ट 1992 में रियो–डी–जनेरियो में पृथ्वी सम्मेलन के दौरान इस धारणीय विकास की संकल्पना को स्वीकार किया गया। रिपोर्ट में धारणीय विकास की व्याख्या *'सभी की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति और एक अच्छे जीवन की आकांक्षा संतुष्टि के लिये सभी को अवसर प्रदान करने'* के रूप में की गई है। अगर धारणीय विकास की अवधारणा की बात करें तो इस अवधारणा की शुरूआत 1962 में हुई, जब वैज्ञानिक राकेल कारसन ने 'दी साइलैंट स्प्रिंग' नामक पुस्तक में डी.डी.टी. के प्रयोग से वन्य जीवन को होने वाली हानि की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया। यह पुस्तक पर्यावरण, अर्थव्यवस्था तथा समाजिक पक्षों के मध्य परस्पर संबंधों के अध्ययन में 'मील का पत्थर' साबित हुई।

धारणीय विकास की अवधारणा आर्थिक विकास की नीतियों को पर्यावरण के अनुरूप बनाने पर जोर देती है। इसका उद्देश्य पर्यावरण के विरूद्ध चलने वाली विकास नीतियों में बदलाव लाना है। धारणीय विकास न केवल पर्यावरण के साथ सामंजस्य लाता है बल्कि यह परिवर्तन की प्रक्रिया को इंगित करता है जिसमें संसाधनों का दोहन, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास की स्थिति तथा संस्थागत परिवर्तनों को वर्तमान के साथ भविष्य की आवश्यकताओं के भी अनुकूल बनाया जा सके। यह आर्थिक विकास की दौड़ के प्रति विश्व को सचेत करता है ताकि विकास तो हो पर प्राकृतिक संसाधनों को कोई क्षति न पहुँचे। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के प्रति वैश्विक स्तर पर जागरूकता दिखाई पड़ रही है। स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में तकनीकी प्रगति, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा तथा पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन लगभग सभी

विकसित एवं विकासशील देशों में देखा जा रहा है। भारत में भी सभी योजनाओं के प्रारंभ होने से पहले पर्यावरणीय होने से रोका जा रहा है। इस प्रकार सरकारी स्तर पर उठाए जा रहे ये कदम भारत में पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता को प्रदर्शित करते हैं। सरकारी प्रयास के साथ–साथ हमारा व्यक्तिगत प्रयास भी अपेक्षित है । हम अपने घरों की छतों एवं बालकनियों में ऐसे पौधे लगायें जिससे आबोहवा शुद्ध हो। ऐसे पौधों के रुप मे एरिका पाम, मनी प्लांट, एलो वेरा, स्नेक प्लांट, पाइन प्लांट, पीस लिली, इंग्लिश आइवरी, मदन–इन–लॉ टंग आदि पौधे लगा सकते है।

आज अंतर्राष्ट्रीय समुदाय अपनी कार्यसूची में पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहा है। यह उन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों से प्रमाणित होता है जिसमें विश्व के लगभग सभी देशों का शीर्ष नेतृत्व शामिल होकर पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के सन्दर्भ में सकारात्मक प्रयास कर रहे हैं किन्तु आज भी विकसित देशों की हठधर्मिता पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान में रोड़ बन रही है। हम यह भूल जाते हैं कि विकास पर्यावरण की कीमत पर नहीं किया जा सकता है। इसमें अन्ततः मनुष्य की ही हार है। व्यक्ति बिना हवा, पानी व स्वच्छ पर्यावरण के जिन्दा नहीं रह सकता है। अगर अब भी हमने अपनी भूल को स्वीकार नहीं किया तो हम जिन नागरिकों के लिए विकास तीव्र कर रहे हैं, शायद वे उस विकास को देखने के लिये जिन्दा न रहें क्योंकि *''जब आखिरी पेड़ कट जाएगा, आखिरी नदी के पानी में जहर घुल जाएगा और आखिरी मछली का शिकार हो जाएगा तब इंसान का एहसास होगा कि वह पैसे नहीं खा सकता।''* इसलिये विकास की अवधारणा को पर्यावरण के साथ धारणीय बनाया जाना चाहिये।

संदर्भ सूची–

1. भारत 2018– सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
2. www.isro.gov.in
3. विले,आर. 'इन्टेग्रेटेड कोस्टल जोन मैनेजमेन्ट : फोर इंट्रेन्चड इल्यूजंस
4. इग्नू के पर्यटन शिक्षा की पुस्तकें
5. www.ibef.org
6. पर्यावरण अध्ययन : कौशिक एवं कौशिक (न्यू एज इंटरनेशनल)
7. the hindu
8. the new Indian express
9. gadgets 360॰
10. first post